This question paper contains 4 printed pages.

Your Roll No. .....

HC

Sl. No. of Ques. Paper : **4438**

Unique Paper Code : **12051602**

Name of Paper : **Hindi Nibandh Aur Anya Gadya Vidhayein**

Name of Course : **B.A. (Hons.) Hindi : CBCS**

Semester : **VI**

Duration : **3 hours**

Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:

(क) विद्या, कला, कविता, साहित्य, धन और राजस्व से भी आचरण सभ्यता अधिक ज्योतिष्मती है। आचरण की सभ्यता को प्राप्त करके एक कंगाल आदमी राजाओं के दिलों पर भी अपना प्रभुत्व जमा सकता है। इस सभ्यता के दर्शन से कला, साहित्य और संगीत को अद्‌भुत सिद्धि प्राप्त होती है। मनोराग अधिक मृदु हो जाता है, विद्या का तीसरा शिव-नेत्र खुल जाता है, चित्र-कला का मौन राग अलापने लग जाता है; वक्ता चुप हो जाता है; लेखक की लेखनी थम जाती है; मूर्ति बनाने वाले के सामने नये कपोल, नये नयन और नयी छवि का दृश्य उपस्थित हो जाता है।

अथवा

Scanned with CamScanner

दुःख और सुख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है जिसका मन वश में है, दुःखी वह है जिसका मन परवश है। परवश होने का अर्थ है खुशामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता, हाँ हजूरी। जिसका मन अपने वश में नहीं है, वही दूसरे के मन का छंदावर्तन करता है, अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडंबर रचता है, दूसरों को फँसाने के लिए जाल बिछाता है। कुटज इन सब मिथ्याचारों से मुक्त है। वह वशी है। वह वैरागी है।

(ख) इन प्रमाणपत्रों से निराला को कोई तात्कालिक लाभ न हुआ, उन्हें किसी पत्रिका के संपादकीय विभाग में नौकरी न मिली। कलकत्ते की पोपुलर ट्रेडिंग कंपनी से बच्चों के लिए कुछ किताबें लिखने का आर्डर जरूर मिल गया। भक्त ध्रुव, भक्त प्रह्लाद और भीष्म पर उन्होंने तीन छोटी-छोटी पुस्तकें लिखीं। भक्त ध्रुव लिखते समय उन्हें कलकत्ते के हिन्दू-मुस्लिम दंगे याद आये। बच्चों में साम्प्रदायिकता के भाव न पनपें, इस विचार से पुस्तक की भूमिका में उन्होंने लिखा, "साथ ही, ईश्वर-प्राप्ति विषयक गूढ़ रहस्यों का उद्‌घाटन भी कर दिया गया है ताकि धर्म के मार्ग से घातक कट्टरता का इस देश से लोप हो जाए, बच्चे हर प्रान्त और हर जाति के बालकों से सहानुभूति रखना सीखें।"

अथवा

इतने दिनों से बिछुड़ने के बाद, मिलने पर, जो सबसे पहली चीज उसने मेरे हाथों पर रखी, वे थे रेशम और कुछ सूत

Scanned with CamScanner

के अजीबोगरीब ढंग से लिपटे-लिपटाए डोरे, बद्धियां, गंडे आदि। यह सूरज देवता के हैं, यह अनंत देवता के, यह आम देवता के, यों ही गिनती-गिनती, आखिर में बोली—'ये हुसैन साहब के गंडे हैं, आपको मेरी ही कसम, इन्हें जरूर ही पहन लीजिएगा।' 8+7

2. 'मेले का ऊँट' निबंध सांस्कृतिक बदलाव को दर्शाता है, स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'लोभ और प्रीति' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। 15

3. 'वैष्णव की फिसलन' निबंध में निहित व्यंग्य पर प्रकाश डालिये। 15

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध की भाषा-शैली पर विचार कीजिए। 15

4. जीवनी के तत्त्वों के आधार पर 'निराला की साहित्य साधना' की समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

'साहित्य की आत्मकथा विधा सत्य पर आश्रित होती है', पांडेय बेचन शर्मा उग्र जी की आत्मकथा 'अपनी खबर' के आधार पर विवेचन कीजिए। 15

5. पाठ्यक्रम में निर्धारित संस्मरण और रेखाचित्र के आधार पर दोनों साहित्यिक विधाओं का अंतर स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

Scanned with CamScanner

'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' यात्रा वृत्तांत की समीक्षा कीजिए।

15

Scanned with CamScanner

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 7514 **IC**

Unique Paper Code : 12051303

Name of the Paper : Hindi Kahani

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।**

1. शिल्प की दृष्टि से 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'छोटा जादूगर' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

2. 'पाजेब' बाल मन की कहानी है - विश्लेषण कीजिए।

अथवा

'तीसरी कसम' कहानी के प्रतिपाद्य का युक्तियुक्त विवेचन कीजिए। (12)

P.T.O.

Scanned with CamScanner

3. 'परिंदे' कहानी की लतिका का चरित्र चित्रण कीजिए। (12)

अथवा

'दोपहर का भोजन' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

4. 'जंगल जातकम' एक प्रतीकात्मक कहानी है - स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

शिल्प की दृष्टि से 'घुसपैठिए' कहानी का विश्लेषण कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) लड़ाई के समय चाँद निकल आया था. ऐसा चाँद जिसके प्रकाश से संस्कृत कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है। और हवा ऐसी चल रही थी जैसी बाणभट्ट की भाषा में 'दंतवीणोपदेशाचार्य' कहलाती। वजीरा सिंह कह रहा था कि कैसे मन-मन भर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी, जब मैं दौड़ा-दौड़ा पीछे गया था। सूबेदार, लहनासिंह से सारा हाल सुन और कागजात पाकर उसकी तुरंत बुद्धि को सराह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते।

अथवा

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आँखे तरेरती हुई बोली - कर चुके दूंसरा उपाय ? जरा सुनूं कौन उपाय करोगे ? कोई खैरात दे देगा कम्मल ? न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकाने में ही नहीं

Scanned with CamScanner

आती. मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर-मर कर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आए। मैं रूपए न दूंगी- न दूंगी।

(ख) पेड़ बड़े उद्विग्न मन से सिर झुकाए तालाब की तरफ चले। वे खेमों के पास पहुंचे ही थे कि उन्हें सन्नाटे को तोड़ती हुई एक चीख सुनाई पड़ी - "बहादुरों ! यही वह बस्ती है जिसे हमें उजाड़ना है, खत्म करना है। हमें मनुष्यों के लिए मिल खड़ी करनी है, कारखाने बनाने हैं, कोयलों की खान खोदनी है। ये निहत्थे पेड़, झाड-झंखाड़ ! इनके लम्बे-चौड़े आकार से डरने की जरूरत नहीं। हमें जल्दी ही इनके वजूद को मिटा देना है...."

अथवा

शाहनी चौंक पड़ी। देर - मेरे घर में मुझे देर ! आंसुओं की भंवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पडा। मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और वह मेरे अन्न पर पले हुए ... नहीं, यह सब कुछ नहीं। ठीक है - देर हो रही है। देर हो रही है। शाहनी के कानों में जैसे यही गूँज रहा है - देर हो रही है - पर नहीं शाहनी रो-रो कर नहीं, शान से निकलेगी इस पुरखों के घर से, मान से लांघेगी यह देहरी, जिस पर एक दिन वह रानी बनकर आ खड़ी हुई थी। अपने लड़खड़ाते कदमों को संभालकर शाहनी ने दुपट्टे से आँखें पोंछी और ड्योढ़ी से बाहर हो गई।

Scanned with CamScanner

(ग) गजाधर बाबू ने आहत, विस्मित दृष्टि से पत्नी को देखा। उनसे अपनी हैसियत छिपी न थी। उनकी पत्नी तंगी का अनुभव कर उसका उल्लेख करती, यह स्वाभाविक था, लेकिन उनमें सहानुभूति का पूर्ण अभाव गजाधर बाबू को बहुत खटका। उनसे यदि राय-बात हो जाती कि प्रबंध कैसे हो, तो उन्हें चिंता कम संतोष अधिक होता। लेकिन उनसे तो केवल शिकायत की जाती थी, जैसे परिवार की सब परेशानियों के लिए वही जिम्मेदार थे।

अथवा

मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों में छल-छल आंसू बहने लगे. वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वह बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आए हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान् का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की। बार-बार आँखें बंद की, मगर आँसू बरसात के पानी की पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे। आधी रात का वक्त होगा। मेहमान खाना खाकर एक-एक करके जा चुके थे। माँ दीवार से सटकर बैठी आँखें फाड़े दीवार को देखे जा रही थी। घर के वातावरण में तनाव ढीला पड़ चुका था।

Scanned with CamScanner